सतगुरु पंथ की खोज

नाम तो नानक ने मथा,

काया मथा कबीर ।

साँई जगजीवन ने ज्योति मथी,

पारब्रह्म के तीर ।।

सुरेशादयाल ने पंथ मथे,

काढा सबका सार ।

सतगुरु पंथ चलायकर,

जीव मुक्त भव पार ।।

कल्कि अवतरण हर मनुष्य में,

सतगुरु पंथ का लक्ष्य ।

जीव इसी से मुक्त हो,

मन हो आत्म प्रत्यक्ष ।।

सन्मुख, सहज, अपरोक्ष हो,

“ घट ” परगट होय जाय ।

धार “ आत्मा ” की लखै,

मन पूरण होय जाय ।।

जीव बदल आतम बने,

मन कागा से हंस ।

लक्ष्य जीव के पूर्ण सब,

एकै सतगुरु पंथ ।।

नाम, ज्योति, काया नहीं,

नहिं स्थान, स्वरूप ।

अनहद और प्रकाश नहिं,

वही है सतगुरु भूप ।।

वाणी, जिह्वा के परे,

आदि नाम सतनाम ।

मूल, सार, सत, पूर्ण है,

वही एक है राम ।।

अंदर, बाहर है नहीं,

निर्गुण, सगुण न होय ।

सत्यनाम एक धार है,

बिरला जाने कोय ।।

घंटा, शंख, मृदंग नहिं,

इकतारा नहिं बीन ।

झींगुर, चिड़िया धुनि नहीं,

नहिं बंशी धुनि लीन ।।

कोई परिवर्तन नहीं,

अचल है, सत्य, अपार ।

स्वयं घटित सतनाम है,

एक सभी का सार ||

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)